

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५

विश्व संस्कृत ग्रन्थालय	1928	I
-------------------------------	------	---

ASRA ARCHIVES

संस्कृत-सिद्धांत-संग्रहः

ॐ नमः ॥ ॐ बुद्ध (नमः) ॥ ७ ॥
नमो जयूतादुति यरु विधानं
लिनयन ॥ ॥ मधुय (नमः) ॥
अग्नि कुलु पाद सुयन विविधं ॥ ॥
यादक सान ॥ वसा (नमः) ॥
श्री कृ नार्य ॥ यद्गुं द्रव विधि यूजा
॥ द्रथू कृ द्वा सन कर्म याय ॥ भव
रुदिका बाय ॥ वसा (नमः) ॥ ॥
॥ कति हा

मयाय ॥ मधुय या स्वक्रादि निव
र्तनादि दीय लाह वक्रा ॥ ॥ वज
मधुल मानक दयक ॥ बालु यूजा ॥
थग द्रथू कृ द्वा ॥

ॐ नमः ॥ श्रीगु वृत्त्या २ ॥ वलिवि य ॥ व
लियात ॥ श्रीवाहनदि धूय दीय
ने जायमाणं ॥ अखलु मधुला काल
त्यादि ॥ पूर्व दक्षिण यश्चि मा रुवमि
वा सर्व स मा वाजिका ॥ कृणु सा वरु
तद्गर्जन रुगा हनन्व ताथ यच ॥ स्म

भान भवनमादवविभुसः साकारि सं
गायहा नित्या नन्दमयी समावसूय
दा वत्यादि पूजादिहि ॥ अगुगत्वादि
॥ अथ यत्केगवसाभर्तृकत्वा ॥
दधिमिवर्के (गमसूत्रं पश्यद्गन्धर्के
(गमस्यः) शर्गा कृसादक (येव पूर्वा
दि कसगाजथ ॥ अद्यादि सूर्यार्घ्यं
दत्वा त्यासं कृत्वा ॥ वल्लिविय ॥ ॐ श्री
येनान श्री ॥ पूर्वदधिदमाय
कथनमः ॥ ध्यात ॥ दधिवसूतमनद्वं
याच्यामीभानवृथिनं चन्द्रमालुतं
भीर्घं सूखगार्गवृथासर्त ॥ ॐ दधिका
नाति ॥ कुति ॥ शुद्धसूटिकसंकाभं
चन्द्रविम्वारुताजटा तमातिभानवृ
यत्वा गिविजायागतायकं ॥ दक्षिण
॥ (गमसूत्रं) ॥ वद्विदवताय १ ॥ ध्यात ॥
ध्यायैनाजलवद्विः सिद्धनावृषविण
हं ॥ अवाकुकं धनं धवं सुविस्तृतसि
तं सदा ॥ गायत्रीमस्तु लक्ष्म्ययत् ॥ कुति ॥

ववसूत महागडं लादिगांगमजासर्त
कालनीगकि संयुक्तं यास्य वक्षिं नमा
मार्द ॥ उगी चो क्रीव ॥ सामधवगायन
म४ ॥ ध्यान ॥ श्रुतगंसमयंदव वादिनी
सहिर्गसर्ग ॥ दंसर्कचधर्गयर्द क्रीव
चन्द्रविशवय ॥ ॐ श्राव्याय (धर्मि म
कुलार्चय ॥ मुक्ति ॥ नागयो ॥ किर्त
दव कुरुक वूलविगर्द ॥ नाजिवर्कव
नसाम्य वंददसागनात्मज ॥ ॥

उदीर्चा ॥ श्रुत ॥ शक्तवधवगायनम४
॥ ध्यान ॥ यक्षनागतिर्दव दिवुर्ज
यक्षधनिर्ग ॥ यक्षकान्तगर्गसर्चि ध्या
नानि वि कथदिदू ॥ ॐ नजासा
ति मकुलार्चय ॥ मुक्ति ॥ वधूक वू
ध्याकमसर्तिर्गर्ग सकाश्ववृक्षमूति
वीदितांग ॥ नमामिशर्नमेतसाव
चायि ॥ शुर्ज सदायक्षधर्नतमानि ॥
॥ ॥ श्रुत्ते ॥ (ममयलिर्ग ॥ सदा
जिवायनम४ ॥ ध्यान ॥ शवय (नाम
यलिर्ग ॥ शिवसर्वकवृयकी ॥ बुद्धा (धु
वायिर्गदव सात्तय शुवनध्वन ॥ ॐ

जिवातामति मनुष्ययुजयत् ॥ मुक्ति ॥
दितकलुतिरुंददं गंगकटतु धा
विर्षं ॥ सर्ववायहनं मीम वन्दनं यत्र
मंजिर्व ॥ ॥ यातु धात ॥ यव्यश
जतं ॥ श्रीयतम ॥ धात ॥ यव्यादक
हितां दवी सर्वविशयदायिता ॥ कर्मा
सुतगतातिर्य धायते मय मलुल ॥
ॐ श्रीश्रुतिमंजु धाययत् ॥ इतिगङ्गा
मयादवी ॥ नकुमावे इतिप्रिया ॥ याता
मनधनंतिर्य श्रीदवीपुलमास्यदं ॥ वा
यो ॥ ॥ गभवर्षत ॥ जनादतायतम ॥
धात ॥ चतुर्विधधनंतिर्य लक्ष्मीवामा
गसंक्षिप्तं ॥ सदादेत्यातकंदर्व धाय ॥
वर्षमद्वय ॥ ॐ गन्धदानमि मनु धाययत्
॥ मुक्ति ॥ द्विजनाजासर्तविष्णु दर्वीसं
तिरुविशदं ॥ मंस्वचक्रगदायावि वंदनं
मानुगादिभि ॥ ॥ ठुहीभत ॥ कू ॥ धातक
॥ वनूधायतम ॥ दंशककहितांदर्व
नागभंमकनासर्त ॥ वाभंरुयधनंभ
क मीभतविकयादिदू ॥ ॐ धवस्यत्व
मि मनु धाययत् ॥ मुक्ति ॥ कलुकुमुमसं
यक ॥ कीवादिमिति विगदं ॥ तकादिरु

बित्तभीर्य भक्तवृत्तसाम्यदं ॥ मत्स्या
यविण वाणायवृत्तक्षेपनमः ॥ ध्यात ॥ क
मलुत्तवर्नभक्त मक्तमालाधर्वयनी
सर्वधवाविडवर्न वक्तवर्ममत्स्यावय
त ॥ ॐ वक्तव्यज्ञानतिमक्तव्ययुजयत ॥
कुति ॥ हंसासनगार्दव म्मेमवृयवि
तामह ॥ वक्तव्यवातिनतिर्य उद्युयावि
तसाम्यदं ॥ सर्वेषु आवाहनैर्यतनाक
नंदत्वा ॥ पूजायावक्तव्यमत्स्यावीददत्त ॥
ॐ अरित्वास्तुव ॥ ॐ अग्निमयि ॥ ॐ हा
माधेनर्तु ॥ ॐ आदित्यगर्भ ॥ ॐ जागवृत्त
॥ ॐ श्रीश्रग ॥ ॐ विश्वावनाटमसि ॥ ॐ व
वृत्तवार्त्तनमसि ॥ ॐ वक्तव्यज्ञान ॥ ॐ
अग्न्यादिकंदत्वा ॥ पूर्वदिन मध्य
यात्रसुखसुमक्तव्यमूत ॥ ॐ सुखयामि
मक्तव्यवाद्यय ॥ वृत्तवृज्जत ॥ व
द ॥ ॐ वक्तव्यज्ञान ॥ ॐ नमः भर्तुवा
य ॥ ॐ विश्वावनाटमसि ॥ विश्वगर्भ
त्वा ॥ मयणीमक्तव्यजय ॥ ॐ मत्ता
ईति युतिष्ठा ॥ विसृज्जत ॥ मक्तव्यग
अग्नि ॥ वक्तव्यगदव ॥ वक्तव्यगजज

मातः ॥ ८॥ मयलिंगपूजनं ॥ विसर्ज
नं ॥ जजमानादि सर्वं यत्कं गच्छेत्तथा
कथं ॥ ॥ तत्ताविसर्वाद्यं वाजं मय
नं ॥ अथ कौनकुम्भमाति सिद्धार्थतिल
तुल्यं ॥ कालयवसमायुक्तं अष्टाक्षरं
यउच्यते ॥ अथादि सूर्याद्यं न्यासः ॥
मूलमकुलं अर्घ्याय पूजा ॥ आवाहना
दि ॥ ८॥ धनसूक्तं दर्शयत् ॥ अक्षुमकुलं ॥
मयणा ॥ सर्वं प्राकृतं ॥ अति अर्घ्याय
साधनं ॥ अथ ज्ञानस्वप्न साधनं ॥ द्रु
क्छिदाचर्कं कुम्भपू ३२ ॥ सधूपं कथू
य ॥ मूलमकुलं अर्घ्याय ॥ ॐ जौ जौ जौ
कुं कुं ४ यत्पू २ धान २ तनतनू वृषचट २
युचट २ कट २ वस २ दम २ धानय २ विद्या
नय २ विधि २ कुं ३ ज्ञानस्वप्न यतनमः ॥
जयनय धान १ ॥ ॐ जौ जौ जौ कुं
कुं ४ यत्पू २ दद्यायतनमः ॥ ॐ जौ धान २
तनतनू वृषमित्रम स्वाहा ॥ ॐ जौ चट २
युचट २ मिखाय वा वट ॥ ॐ जौ कट २
वस २ कवचाय ह्रीं ॥ ॐ जौ दम २ धान
य २ नय २ यव वट ॥ ॐ जौ विधि २ कुं ३

श्रुताय ईरुद ॥ पूजन ॥ पून मूल म
 कुल जय नय वान १२ ॥ ॐ गि ज्ञान स्वप्न
 साधन विधि ॥ ॥ अथ मधुय नि
 वीरुर्ण ॥ न्यासा गायत्री मकुल नि वीरुर्ण
 ॥ वृथी स्थापन ॥ ॐ मय इउरुति ॥
 हनिर्मा ऊन ॥ हनति हनि ॥
 वासाद यगिशा ॥ ॐ पुता मूर्कति ॥
 मधुयाल कन ॥ ॐ वाय वाया ॥
 वाहि विक्रय न ॥ ॐ वाहय यम ॥
 लाजा विक्रय न ॥ ॐ त्वउरु विष्ट ॥
 यकै गवा न वाकृर्ण ॥ ॐ वविण्ण ॥
 श्रुय या गाद क न श्रुय कन ॥ ॐ हनि ति
 पकै भूण ए वशिर्ण ॥ ॐ वक्राहर्ण ॥
 पूय माला वशिर्ण ॥ ॐ श्री भग ल क्री ॥
 वउ शिवा त ॥ ॐ तस्य न यविण्ण ॥
 ॐ लादि स्वक्र पूजन ॥ चन्दनादि ॥
 पूय धूप दीया क ॥ ॐ गि मधुयाल क ॥

तामा भिव भक्ति कल म पूजन ॥
 न्यास ॥ श्रुय या ग पूजन ॥ आसन ॥

वनास्त्राय २ वनगवूजस्त्राय २ यद्वास्त्राय २ ॥ १ ॥

ॐ गत्वा जाति ॥ श्रूय कृष्ण ॥

ॐ दवस्यत्वा ॥ ॐ विष्णु नवाटमति ॥

ॐ श्री धर्म ॥ ॐ बुद्ध जज्ञान ॥

ॐ तमः सकुवाय ॥ ॐ द्या मालिनि ॥

ॐ दवी नाथा ॥ श्रावाहनादि ॥ धूप दीप
जायकाण ॥ जिवभक्ति समर्प ॥ जज

मानत जिवभक्ति कलभ आंदाव श्रुति

कृष्णायक ३ वाक्कलान यवैगयान

हाय ॥ ॐ शाश्वत लाकपालस यक्ष्म

वक्रक्षयच ॥ विद्यातां धर्मसनाथिय ठ

यं वाक्कुमिवाक्या ॥ ॐ यक्ष्म वक्रक्ष

धर्मिय विद्यातां धर्मसनाथच ॥ यूर्यसुवा

हनास्त्राय सनधाम्मिवाक्या ॥ ॥

ॐ वक्राहर्ष ॥ ॐ स्वस्तिना समीता ॥

मूलमक्तु संद ॥ जवसं जिव भक्ति खव

॥ उदंकन धूमय ७ ॥ लिनासन धूजत

॥ लिनचवास्त्राय २ ॥ लिनचवगवूज

स्त्राय ॥ लिनयद्वास्त्राय २ ॥

ॐ गत्वा जाति ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥

ॐ गवूजस्त्राय २ ॥ ॐ सुयं (सु)ति ॥

यद्वासनाय २॥ ॐ यद्वातित्रय ॥
लक्ष्मी नमः ॥ श्री श्री लक्ष्मी ॥
सर्वस्वये नमः ॥ ॐ यावकात ॥
व्यक्त ॥ नावाय तना नाथ ४ भस्व
चक्रगदाधर ॥ लक्ष्मी सहिता श्री ॥
व ग नू ण ग ज त मा सु ग ॥
क भ वा य श्री सहिता य २॥ क भ वा
दि मूर्त्तिय २॥ ॐ विष्णु न वा ट म सि ॥
प्रियादि मूर्त्तिय २॥ ॐ श्री श्री लक्ष्मी ॥
ॐ वक्त्रयज्ञान ॥ ॐ विष्णु न वा ट ॥
ॐ नमः ॥ क वा य ॥ ॐ दिव्य लक्ष्मी ॥
ॐ यत्नं न द्य स ॥ आवाहनादि ॥ अथ
दीपजाप मन्त्र ॥ नत्ता य विद्यादि
॥

पूर्वद्वारं गत्वा ॥ ॐ दक्षयत्वा ॥
ॐ गत्वा जामि ॥ अमल द्वा नाय २॥
ॐ द्वा नाय ॥ यथा यत्न मः ॥ ॐ जगत्
ॐ रुद्राय नमः ॥ ॐ रुद्राय ॥ ॐ रुद्राय ॥
ॐ रुद्राय २॥ दक्षिणे ॥ ॐ ॐ दीविषु
आवाहना ॥ अग्नौ गत्वादि ॥

दक्षिण दान यूजा॥

सुहाग दानाय २॥ तुं दानादवी॥

यं थं यनम४॥ तुं जग यं थं॥

तुं वलुयनम४॥ वं थं॥ तुं वृन्नावनी

तुं वृन्नाय २॥ या थं॥ तुं दवयुतो

आवाहन॥ अण्गं वादि॥

२४३ दान यूजा॥

कल्याण दानाय २॥ तुं दानादवी॥

यं थं यनम४॥ तुं जग यं थं॥

तुं जयायनम४॥ या थं॥ तुं विष्णुर्लोक

तुं विजयाय २॥ यं थं॥ तुं दिवावनी

आवाहन॥ अण्गं वादि॥

२४४ दान यूजा॥

सुहाग दानायनम४॥ तुं दानादवी॥

यं थं यनम४॥ तुं जग यं थं॥

तुं धारियनम४॥ या थं॥ तुं यतद्विष्णु

तुं विधाणीनम४॥ वं थं॥ तुं विष्णुनना

आवाहन॥ अण्गं वादि॥

२४५ दान यूजा॥ अण्गं वादि॥

जजमानत यूथराजत वावथ ॥ सि
दिवकुल्यादि ॥ य १० ॥ वनवृजा ॥
उंगुवृक्षवक्ष ॥ अद्यादि सूर्याद्यदत्वा
न्यासकावथ ॥ आत्मयुजा चन्द्रता
दि ॥ उं मदीं ग्रेत्या ॥ वामहस्तगृहीत्वा
उं गक्षनांत्वा ॥ गक्षयतिवलि ॥
उं तमावक्षसाय ॥ कृण्वलि ॥
उं जागवदसे ॥ दूग्तवलि ॥
उं दृगं दृगया ॥ उदकवलि ॥
उं त्वज्जैविष्टदा ॥ लाजाविषयत ॥
गयणीमकुंक्ष कृणुतिवाकृक्ष ॥
उं जदवाधव ॥ यनिसमूहत ॥
उं मानकाक ॥ यूयल्यत ॥
उं त्वावर्गवृ ॥ कुलस्वर्त ॥
उं तत्ताजामि ॥ अयूकक्ष ॥
गयणीधवर्ष ॥ यष्टिमनदक्षि ॥
दक्षि ॥ तडकृष ॥ उतत्रक्षम ॥
आग्नेयां यष्टिमात्रखा दक्षि ॥ विष्ट
दवता ॥ उतत्रसामदवातां खाजा यक्त
कुमक्षमा ॥ अश्वत्थैः समीगर्त स्वय
भवद्रुतासत ॥ त्रखावकुक्ष्यदत्वा

मयणीवित्तसद्व्य४॥
ॐ सदस्यति॥ अत्यश्रुयन॥
ॐ वीहयश्रम॥ ब्राह्मिविक्रयन॥
ॐ दवस्यला॥ क्रमासर्त॥
ॐ दिनलक्ष्मण॥ विष्णुनासर्त॥
ॐ ता० सविठु॥
ॐ यन्नातिन॥ सुवर्षुयन्नातिव्यय॥
ॐ गजासिगु॥ दृतासत॥
ॐ लउंशिविष्टदा॥ क्रमानिमृणवष्टय
ॐ निन्नादनी॥ यत्तैर्मृणवष्टर्त॥
ॐ दिनलक्षवर्षु॥ लक्ष्मीवृजर्त॥
ॐ त्यावृगर्किड॥ काष्ठगदक्ष॥
ॐ ॐत्थनात्था॥ जह्मनूजाजर्त॥
ॐ सतवर्षुमृ॥ कृष्णवृजत॥
ॐ अग्निमृद्रा॥ अग्निमातीय॥
ॐ नकादतव॥ अर्थयततिवर्द्धन॥
ॐ अश्ववाचद॥ वलिषदात॥
ॐ कथादमप्ति॥ उयस्यर्त॥
अर्थवाणादकत अत्युक्त॥
अश्वक्षसंनक॥ कवचननामगु८०

मयणी जयतु ॥ ८५ तू मूदा द भयतु ॥

ॐ अग्निमृषि ॥ अग्निपूजर्तु ॥

अग्नि त्वात् ॥ हृत ॥ जा ० व ॥ मे लु व ॥

जाति ॥ की कृत् ॥ त ल ॥ य ॥

ॐ वक्रत त ल ॥ य ॥

ॐ मरु श्रवा य त ल ॥ य ॥

तत्ता अग्नि गृहीत्वा ॥

ॐ अन्वग्नि वृषसा ॥ अग्निष द कृति

कृत् जथ कार्य मूवा य ॥

ॐ मयि गृह्णाम ॥ अग्नि मू य त ॥

ॐ स्वस्ति वाच त य ॥ ८० ॥

ॐ मर्मातिग ॥ ॐ त्व न त स छ द्य ॥

ॐ दृष्टा दि वि दृ ॥ न ल्य कृ ल ॥

१ न गु व दाय ॐ मा स त त म ४ ॥

ज श र्व दाय ॐ द मा स त त म ४ ॥

साम व दाय ॐ द मा स त त म ४ ॥

अथ र्व व दाय ॐ द मा स त त म ४ ॥

ॐ अग्नि मा रु ॥ यूर्व न गु व दाय २ ॥

ॐ ॐ य मा रु ॥ द क्रि ॥ ज श र्व दाय २

ॐ अग्ने आ या हि ॥ य सि म साम व दाय २

ॐ सन्नायवी ॥ उरुन श्रुथर्ववदाय २ ॥

ॐ अगुवदायतम ४ ॥ श्रुति (गम) गाय २ ॥
सामदवगायतम ४ ॥ गायत्री कृत्यसू
तम ४ ॥ यूर्ध्व ॥

ॐ जशर्वदातम ४ ॥ शानदाज (गम) गाय
यतम ४ ॥ वक्रदवगायतम ४ ॥ हृदय
कृत्यसूतम ४ ॥ दक्षिण ॥

ॐ सामवदायतम ४ ॥ कास्यय (गम) गाय
यतम ४ ॥ वृद्धदवगायतम ४ ॥ जग
ती कृत्यसूतम ४ ॥ यश्चिम् ॥

ॐ श्रुथर्ववदायतम ४ ॥ वेगातस्य (गम)
गायतम ४ ॥ वृद्धदवगायतम ४ ॥
श्रुतयुक्त्यसूतम ४ ॥ उरु ॥

धसमिधक्षाम ॥ ॐ कावक्षस्वाहा ॥
मर्कतुष्टी रुद्रयात ॥ ॐ चथादधव ॥
श्रुतिमूर्खी कवर्ध ॥ वक्रासर्त ॥ यक्षी
गासर्त ॥ वृत्तिवलासर्त ॥ ॐ दिवस्थगर्त
॥ वक्रासर्त ॥ ॐ वृद्धदिविष्टवि ॥ यत्नी

ॐ ॐ लाय भुनाधिय तय वडाहला
य जेनावता स्त्राय नमः ॥

ॐ ॐ नय गजाधिय तय भकिहला
य काग स्त्राय नमः ॥

ॐ यमाय यताधिय तय दलुहला
य महिवा स्त्राय नमः ॥

ॐ नेम लाय नाकसाधिय तय स्व
प्रहलाय यता स्त्राय नमः ॥

ॐ वनूधाय जलाधिय तय वासह
लाय सकना स्त्राय नमः ॥

वायूवशाधिय तय धजहला
य मृग स्त्राय नमः ॥

ॐ कूव नाय धताधिय तय नकू
लहलाय हया स्त्राय नमः ॥

ॐ ॐ भनाय सर्वरुताधिय तय ति
थलहला वृखरा स्त्राय नमः ॥

ॐ विष्णुव श्रीधिय तय चक्रह
लाय कूर्मा स्त्राय नमः ॥

ॐ वक्रक्ष उर्ध्वधिय तय वक्रह
लाय हंसा स्त्राय नमः ॥

ॐ नमः समस्त देवाता विमूर्खाय ला
दिता वल्लुय शु क ह लाय ह वा
साय स्वाहा यती समी तिताय न
ॐ ननाय नमः ॥ ॥

ॐ नका हती ॥ यके मृग न व हती ॥
ॐ कया तपिण ॥ कसुत य विरु न
॥ ॥ जथा र वि वि म कु ल कल सा
वृती ॥

ॐ वृद्धा न वृद्धा गत्वा ॥ ॥
मयणी मकुत ॥ तिनी कल त्यास ॥
मृग्य कल ॥ ॐ गत्वा जमि ॥
आसत ॥ ॐ द व स्य त्वा ॥ ॐ गल्लता ति
भक्तिता न लभय ॥ ॐ चत्वा विभृग ॥
कति सा वृकाय ॥ ॐ कति कुद ॥
तुर्वला काय ॥ ॐ ता ० स विरु ॥
य दूत साखाय ॥ ॐ उदि व ० क ॥
जयाय ॥ ॐ शं जेत मते ॥
विजयाय ॥ ॐ ॐ दी विष्णु ॥
कूमद धजाय ॥ ॐ मृता क मि ल्द ॥

वजाय २॥ ॐ विश्वाकमाति॥
 वियूलकणाय २॥ ॐ वृहस्पतक॥
 कीर्तियताकाय २॥ ॐ श्रवणं वा ॥
 श्रविदवाय २॥ ॐ वक्रयज्ञात॥
 कृतयूगाय २ ॥ ॐ श्रुक्राजोपक॥
 मणुवदाय २ ॥ ॐ श्रुतिमिदुयू॥
 सासायनम ४ ॥ ॐ ॐ मन्दवाश्रु॥
 श्रुतानाय २ ॥ ॐ जदकन्द ॥
 यूपमालाय २॥ ॐ श्रीशतलक्ष्मी॥
 ध्यान॥ जेनावतगजानूरुं स्वर्गव
 र्गुकिनीटित ॥ सदसुतयर्तभर्त
 वरुयानिविशवयत॥ ॐ ल्दाय
 वरुहकायभुनाविद्येतयजेना
 वगाम्नायनम ४॥ ॐ शान्तमिन्दु॥
 श्रावाहनादि॥ नूडादिकृणयाला
 य २॥ ॐ श्रुधवाच ॥
 कृष्णतयनिस्तनर्ण॥ ॐ कयातप्रि॥
 धूप॥ ॐ धूनति॥ दीप॥ ॐ गजासि॥
 रुत॥ ॐ यारुलती॥ तैवद्य॥ ॐ
 श्रुतयत॥ यतिद्या॥ ॐ मनाजाति॥

जाय ॥ सा ॥ नमस्तुतससीयत्य् वू
विषियतयश्चव । उरुशगेषू क्रमाति
वकार्थस्तिनीरुव ॥ अरुगन्धदि ॥ ॥

१ दक्षिणदिगद्वा न यूजनं गत्वा ॥ ॥

गयणी मकुल ॥ निनीकृत ॥

अत्युक्तं ॥ ॐ तत्सत्ताडामि ॥

आसन ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥

हृदिगानधयनम ४ ॥ ॐ चत्वाविर्भुम्भ ॥

माङ्गल्यवृत्तायनम ४ ॥ ॐ द्यामात्तकि ॥

खलाकायनम ४ ॥ ॐ मनसकाम ॥

अजघ्नभस्वाय २ ॥ ॐ उययामगृ ॥

चक्षुयनम ४ ॥ ॐ वृन्नावती ८ ॥

यचक्षुय २ ॥ ॐ दवभृगो ॥

यूधुनीकधजाय २ ॥ ॐ अस्माकमित्यु ॥

उमकुल्य २ ॥ अजिडभा ॥

वृहत्कृणाय २ ॥ ॐ वृहस्यत ॥

विषियताय २ ॥ ॐ वृन्द आसा ॥

अद्विदवताय २ ॥ ॐ अम्ब अम्बिक ॥

गुणायुगय २ ॥ ॐ अक्रवाजाय ॥

यशर्वदाय २॥ ॐ ॐ वगार्जत्वा ॥
वृषाय २॥ उ वृषा स्वा ॥
वृहस्पतये ॥ ॐ वृहस्पतये ॥
वृषमाता ॥ ॐ श्रीश्रीगलक्त्री ॥
ध्यान ॥ कृताक्तमहिषावृत्त उ वृहस्प
रयानकः ॥ कालयाग धनं निर्णय ॥ ध्या
यक्त दक्षिणधिया ॥ जमाय उ वृह
लाय यगाधियतय महिषास्त्राय २॥
ॐ जमनदक्त ॥ श्रावाहनादि ॥
उगादि कृत्वा लाय २॥ ॐ नमावत्तुसा
श्रमिवगालाय २॥ ॐ श्रुत्येतातत्ता ॥
कृत्तन यनित्तनवर्ण ॥ ॐ कयातवि ॥
धूय ॥ दीप ॥ रुत ॥ नेवद्य ॥ यतिष्ठा ॥
ॐ मनाइति ॥ जाय ॥ लाय ॥
महिषाय वि श्रासीन सर्वलाककृत्य
कर्व ॥ कालवृत्त महावोड दधुयानि
नमास्तु ॥ श्रुगन्ध्यादि ॥ ॥
१ यश्चिमदानं यज्ञा कृत्वा ॥ ॥

मयणी मक्तु ॥ तिनी कृष्ण ॥
मृत्यु कृष्ण ॥ तुं गत्वा जासि ॥
आसन ॥ तुं दवस्यत्वा ॥
निवृत्तिगात्र क्षयनम ॥ ४ ॥ तुं चत्वा नि
भुला वाटु काय २ ॥ तुं मनामिण ॥
जनला काय २ ॥ तुं मयना मयि ॥
वृषिनिभस्वाय २ ॥ तुं जगद्विथ ॥
रुदाय २ ॥ तुं विश्वानूकवी ॥
भुलदाय २ ॥ तुं दिवा वा विष्णु ॥
सूकवर्षु धजाय २ ॥ तुं मूला कमितु
पासाय २ ॥ तुं वनू लस्या सूरु ॥
कान्ति कृणाय २ ॥ तुं वृहस्पति कृ ॥
अष्टयना काय २ ॥ तुं मृगु नमिमा ॥
मृषिदवताय २ ॥ तुं विष्णु ववाट ॥
दायनशमय २ ॥ तुं मूक वाजाय ॥
ममवदाय २ ॥ तुं मृग मयाहि ॥
भुजाय २ ॥ तुं मृतात्यविभु ॥
मनिश्वराय २ ॥ तुं मन्ता दवी ॥
पूष्यमाता ॥ तुं श्रीश्वर लक्ष्मी ॥

आन॥ नागवासुधर्वदृष्टं वत्ताद्ययुति
विग्रहं॥ गङ्गाकधवलं आयुं वनूषं
मकवासुतं॥ वनूषाय वासुदेसाय ज
लाधियगय मकवासुतय२॥ ॥

ॐ ॐ मभवनूष॥ श्रावाहतादि॥
यगाधियकृणवालाय२॥ ॐ पाताय स्वा
कालाक कृणाय२॥ ॐ उवूडाक्षम॥
कृसुतयनिसुनन॥ ॐ कयानचिण॥
धूय॥ दीय॥ रुल॥ नेवद्य॥
यगिष्ठा॥ ॐ मनाहूति॥ जाय॥ लाण॥
वानूषीशुवतांभीमं मकवासुतंग
मिनं॥ सुवीलकावसाहार्थं वासुह
सुतमाकुग॥ श्रुगन्धादि॥ ॥

उरुनदिगघानयूजनं॥
गयणीमकुल॥ तिनीकृषं॥
श्रुयकृष॥ ॐ गत्वाजाति॥
श्रामन॥ ॐ दवस्यत्वा॥
श्रावाहतावक्षय२॥ ॐ चत्वाविभृ॥
वरुसाष्टक्राय२॥ ॐ उदवासा॥

भयलाकाय २॥ ॐ गमस्य ॥
विहवसाखाय २॥ ॐ उलाखाय ॥
क्रिय २॥ ॐ यतद्विष्णु ॥
५ क्रिय २॥ ॐ विष्णु नोटे ॥
भूमयधजाय २॥ ॐ भूमाकमिन्द ॥
गदाय २॥ ॐ भुयर्षुयाकं डन्य ॥
जाडकुणाय २॥ ॐ वृहस्पति ॥
साधयनाकाय २॥ ॐ हृदभासा ॥
अविधवगाय २॥ ॐ जातवदसं ॥
कलिशमय २॥ ॐ भूकनाकाय ॥
अथर्ववदाय २॥ ॐ सन्नादवी ॥
नादव २॥ ॐ कयानविष्णु ॥
कमुव २॥ ॐ कमुकृत्तन ॥
यूयमाता ॥ ॐ श्री गणेशाय ॥
ध्यान ॥ कृवन्मभ्रसामीनं सुगर्ह
स्वर्गविष्णु ॥ स्वर्गकायगदाहर्ष
उरुनाधिवतिसन्तन ॥ कृवनाय
नकलहसाय धनाधिवतय हया
सायनम ४॥ ॐ कृविदगज ॥
श्रावाहनादि ॥

यिसावकणयालायनमः॥ॐ ह्रीं ह्रीं॥
एकपादाकणाय॥ॐ तीलगीवा॥
कसनयनिरुवर्ष॥ॐ कयानविण॥
धूप॥ दीप॥ रुत॥ नेवद्य॥
यतिष्ठा॥ॐ मनाश्रि॥ जाय॥ साग॥
जकभवनमहाकार्य॥ श्रुत्वावृद्धवनध
रं॥ वत्तारुवक्षसर्वज्ञ॥ गदाहस्तनमा
स्तुत॥ श्रुगत्मादि॥ ॥

१ श्रुमिदिगकलस्यूजनं॥ ॥
मयगीमक्तक्षानिनीकृषं॥
श्रुत्वाक्ष॥ॐ तत्त्वाजामि॥
श्रुतत॥ॐ दवस्यत्वा॥
मिदिदावृकाय॥ॐ श्रुयन्ताश्रुति॥
विदिद्वय॥ॐ वदाहमर्ष॥
कमूदधजाय॥ॐ श्रुसाकमित्य॥
भकाय॥ॐ यगुयाना॥
कृणाय॥ॐ वृहस्यत॥
विजययताकाय॥ॐ वृत्तश्रुता॥
श्रुदिदवताय॥ॐ श्रुवृक्षत॥

ॐ सुकारि यचै दिवाधं श्रु
माला कमलु लू । दाला माला कलन
क । अगर्भ मकि धनकी ॥ श्रुतयम
कि हलाय गजाधियाय । अगभला
यनम ४॥ श्रियूनात ककणयालाय २॥
ॐ शुभक ॥ धूय ॥ दीय ॥ रुत ॥
नेवद्य ॥ यतिष्ठ ॥ ॐ मनाईति ॥ जाय ॥
लाण ॥ ॐ श्रुत्तयमजमासीन म
हाज ४ समय २॥ नकमाल्याम्वन
धन । मकि हर्षनमाकुत ॥ श्रुगं धादि ॥

१ नेमद्यदिगकलसयूजन ॥ ॥
गभयणीमकुल ॥ निनीकृषं ॥
श्रुत्तकृषं ॥ ॐ गत्वाजामि ॥
श्रुत्त ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥
कीर्तिदायकाय २॥ ॐ स्वकितावूत्ता ॥
वृषिदाय २॥ ॐ श्रुत्त कम ॥
वामनाकधजाय २॥ ॐ श्रुत्ताकामि ॥
खप्पाय २॥ ॐ जागवदम ॥
कलकणाय २॥ ॐ वृहस्यगं ॥
वृत्तियगाकाय २॥ ॐ वूत्ताश्रुता ॥

श्रुविदववजदह ॥ ॐ विरुकाव ० ॥
ध्यान ॥ ॐ नक्तनग भवावूरु नीलात्य
लदल्युरी कयाति याति म ॥ अर्घ्य
विवर्त नाकसम्भवं ॥ नेम त्याय स्वप्न
हलाय नाकसाधियाय उतास्ताय ॥
ॐ उक्तदवी ॥ आवाहनादि ॥ ॥

५ श्रुमिडि काकणयालाय ॥ ॐ यस्वदत्वा
कसनयविसुर्वर्ण ॥ ॐ कयानविण ॥
धूय ॥ दीय ॥ कृत ॥ नेवद्य ॥
यतिष्ठा ॥ ॐ मताईति ॥ जाय ॥ कण ॥
नेम त्यादिमिताथत्वं भवावूरु महा
वर्ण ॥ नक्तमांससदोषात् स्वप्नया
तिन्तमाकुण ॥ श्रुगन्धादि ॥ ॥

२ वायुवादिगकलसयूजन ॥ ॥
मयणी मक्तलनातिनीकृर्ण ॥
श्रुयूकृर्ण ॥ ॐ गत्वा कामि ॥
श्रुतन ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥
धृतिवृकाय ॥ ॐ सतमिन्दुस ॥
मिडिदाय ॥ ॐ श्रुता रुडा ॥
सर्वतग भजाय ॥ ॐ श्रुता कमित्ति ॥

धञ्जहृक्काय २॥ ॐ वायवायादि ॥
 माध्वकृगाय २॥ ॐ वृहस्पतम् ॥
 रुद्रिपताकाय २॥ ॐ वृत्तम् ॥
 श्रुविदवतागनूजाय २॥ ॐ शुक्लम् ॥
 ध्यान ॥ ॐ श्रुयीत हवित् कार्यं विला
 लधञ्जधविर्लम् ॥ ज्ञानरूपं चैव गान्ता
 हवित् लम् ॥ समीविर्लम् ॥ वायव्यधञ्ज
 हृक्काय यावन्मिषतय मृगस्त्याय २॥
 ॐ गववायूद ॥ श्रुवाहनादि ॥ ॥
 कालवृषकृष्णयात्राय २॥ ॐ दृष्टम् ॥
 कृष्णनयनिकुम्भम् ॥ ॐ कयानविष्णु ॥
 धूपम् ॥ दीपम् ॥ रुद्रम् ॥ तैवद्यम् ॥
 प्रतिष्ठा ॥ ॐ मनाहृति ॥ जाय ॥ कृष्णम् ॥
 वगिनं यमहायाहं सर्वरूपं रूपांश्च
 न ॥ मृगस्तनसूसागम् ॥ धञ्जदहृत्त
 माहृत्तम् ॥ श्रुगन्ध्यादि ॥

१००० भनदिगकलस्यूजर्तम् ॥
 गायत्रीमन्त्रम् ॥ तित्रीकृष्णम् ॥
 श्रुत्यकृष्णम् ॥ ॐ गत्वाजाति ॥
 श्रुस्तम् ॥ ॐ धवस्यत्वा ॥

भाऊदावृत्ताय २॥ ॐ स्वस्ति र्धाम ॥
पूषिदाय २॥ ॐ वृहस्पतये नमः ॥
भुवनिष्ठा धजाय २॥ ॐ अस्माकमिन्द्र ॥
शिशूलहस्ताय २॥ ॐ शिवाय नमः ॥
कालिकुण्डाय २॥ ॐ वृहस्पतये ॥
सावयताकाय २॥ ॐ अश्विनाय नमः ॥
अभिधवमहाकालाय २॥ ॐ नीलशिवा ॥
धाम ॥ ॐ अनन्तवर्मरावृत्ते शिशूल
बालधामिनि ॥ अनन्तवर्मरावृत्ते
चतुर्भुजाय नमः ॥ ॐ अनन्तवर्मराय
शिशूलहस्ताय सर्वरक्षाय नमः ॥
राजाय २॥ ॐ नमो अनन्तवर्मराय ॥
आवाहनादि ॥

श्रीमन्नृपकण्ठाय २॥ ॐ अथवा
कसनयनिस्तनव ॥ ॐ कयानचि ॥
धूप ॥ दीप ॥ रुद्र ॥ नैवद्य ॥
वतिष्ठा ॥ ॐ मन्त्राह्वय ॥ जाय ॥ माता ॥
ॐ अनन्तवर्मराय नमः ॥ वृषासुतसमा
हिता ॥ जेलाकाभियोगिभक्तु शूलया
नितनामुग ॥ अग्न्यादि ॥ ॥

१ मूर्द्धादिगकलस्यूजनं ॥
 गायत्री मन्त्रं ॥ निनीकृष्णं ॥
 मृत्युकृष्णं ॥ ॐ गत्वाजामि ॥
 आसनं ॥ ॐ ददस्यत्वा ॥
 हर्षधजाय २ ॥ ॐ मूर्द्धाकनित्य ॥
 चक्रहस्ताय २ ॥ ॐ मुयर्त्तुवाचै ॥
 ध्ययकृष्णाय २ ॥ ॐ वृहस्पति ॥
 शिष्याकाय २ ॥ ॐ नववायवृह ॥
 मृषिधवाय २ ॥ ॐ तमास्तुसर्व ॥
 ध्यानं ॥ मृतकं पृथुवीकारं रुताद
 सप्तत्रिंशति ॥ विद्युदामयणी कार्मक
 मीनृष्टययूजय ॥ विष्णुवचक्रहस्ता
 य मूर्द्धाधियाय कूर्मसनाय नमः ॥
 ॐ शिष्यादावि ॥ आवाहनादि ॥
 पुकदृष्टकृष्णवालाय २ ॥ ॐ मूर्द्धा
 कृतनवत्रिंशत् ॥ ॐ कयानचि ॥
 धूय ॥ दीय ॥ रुत ॥ नैवद्य ॥
 यतिषा ॥ ॐ मताह्मि ॥ जाय ॥ लाय ॥
 कूर्मयी भसर्तयव विद्युत्पूजे सम
 द्याति ॥ मूर्द्धा शगस्त्रिं विष्णु चक्रया

नितमास्तुत ॥ अगुगन्धादि ॥

१७६ दिगकलसपूजन ॥

मयगीमकुल ॥ निनीकृल ॥

असूकृल ॥ ठुंगलाजानि ॥

आसुत ॥ ठुं दवस्यत्वा ॥

कमदधजाय २ ॥ ठुं अस्माकमित्ति ॥

यद्महसाय २ ॥ ठुं यद्मानि ॥

गलकुलाय २ ॥ ठुं वृहस्य ॥

वीतवर्षयगाकाय २ ॥

वायुनाधियगाय २ ॥ ठुं ताववायु ॥

ध्यान ॥ वीतवीगं वहुवर्षं, वृक्षलं

वहुवानतं ॥ हंसजानके विजालं

उल्लुक्कुकमस्तुल ॥ वृक्षतयद्मह

साय ७६ धियगाय हंससनाय २ ॥

ठुं वृक्षलस्यात्वा ॥ आवाहनादि ॥

मयरात्र कुणवालाय २ ॥ ठुं विस्वाशुक्

कृतनयविसुवर्ष ॥ ठुं कयान्तविण ॥

धूप ॥ दीप ॥ रुत ॥ नेवद्य ॥

यगिष्ठा ॥ ठुं मनाहृति ॥ जाय ॥ साय ॥

वृक्षलं वीतवृषके, वृक्षज्ञानयना

यन। यष्टकाकावलीहस्तं, उद्धाधि
यनमाकुत॥ अयं च यष्टकाववक
लीयं, सृष्टाविष्टविनिघातिगयं।
घावादिधवस्तिगळुलसर्वं वक्रा
कवृत्तस्वदिजिदि (मेयू॥ अणगन्ध
दि॥

१ नेजत्यस्य पूर्व्याग्नि अस्तु कलस॥
मयगीमकुत॥ निनाकुलं॥
अस्तु कुलं॥ उं गत्वा कामि॥
आसत॥ उं धवस्यत्वा॥
कृणाय२॥ उं वृहस्यग॥
यगाकाय२॥ उं यत्वा सूक्तमि॥
क्षान॥ विष्टुजं निराददा, जिखा
वानसमन्तिगा४। दक्षक विपूलं विष्टु
अस्तु वृषविगवयगू॥ उं अस्तु नाजाय॥
उं वभुभमव॥ आवाहनादि॥
धूय॥ दीप॥ रुत॥ नेवद्य॥
पुगिष्ठा॥ उं मनाहूति॥ जाय॥ साग॥
कर्तिकादकिर्लहस्तं, वामहस्तचरव
यव॥ नीलमघाकतिवृषं, अस्तु नाज

नमामिहं॥ मृगगन्धादि॥

१ यस्मिन्मातृवशीकलस॥

मयणीमकुक्ष॥ निवीकृक्ष॥

मृत्युकृक्ष॥ तुं गत्वाजामि॥

आसत॥ तुं दवस्यत्वा॥

शीकृणाय२॥ तुं वृहस्यतामृ॥

यताकाय२॥ तुं मृस्माकमित्यु॥

धन॥ यस्मायविस्मिन्मातृवशीकलस॥

त्यलदलस्य॥ शीन्द्रवयमहस्यकृक्ष

कान्तिशोवनसंस्मिन्मातृवशीकृक्ष२॥

तुं शीधगलकृक्ष॥ मृवाहनादि॥

धूय॥ दीय॥ रुल॥ नैवद्य॥

यतिशु॥ तुं मताहृति॥ जाय॥ मृग॥

मकवाहृतिगन्धवी॥ लाकण्यसूयू

जिगा॥ सिन्द्रवात्यलवानिहं॥ शीधवी

यसमास्यहं॥ मृगगन्धादि॥

१ यस्मिन्मातृवशीकलस॥

मयणीमकुक्ष॥ निवीकृक्ष॥

मृत्युकृक्ष॥ तुं गत्वाजामि॥

आसत॥ तुं दवस्यत्वा॥

लक्ष्मी कृणाय २॥ ॐ वृहस्पति ॥
यताकाय २॥ ॐ ॐ त्र्यम्बक ॥
ध्यान ॥ यद्वासन कितान्दवी सुदृष्ट
टिकसुतिरु ॥ ॐ सुदृष्ट दयलुहसुचं ॥
नधन्य वनयदा ॥ ॐ लक्ष्मी सुकथय ॥
ॐ धामालकिर्व ॥ आवाहनादि ॥
धूप ॥ दीप ॥ रुत ॥ नेवद्य ॥
प्रतिष्ठा ॥ ॐ मन्ताहति ॥ जाय ॥ क्षाय ॥
कूर्मवा ॥ भसनं तासीनी ॥ तुषावक
मृदावस ॥ यद्वादनसंयुक्तं लक्ष्मी
धवितमास्यह ॥ ॐ गन्धमादि ॥ ॥

१ वायुवदकि ॥ ॐ कुरु कलस ॥
गयणीमकु ॥ ॐ निनीकु ॥
श्रुयुक्त ॥ ॐ तत्वाजामि ॥
आसन ॥ ॐ दवस्यत्वासविठु ॥
कृणाय २॥ ॐ वृहस्पति ॥
यताकाय २॥ ॐ ॐ त्र्यम्बक ॥
ध्यान ॥ कयालमालारुवर्ण स्वदाज्ञ
काद्यहसुर्क ॥ नकिर्तं सर्वकर्मालि ॥
गयालं ययुजयतु ॥

ॐ कृष्णयालमूर्ति य २॥ ॐ श्रुथेगाने ॥
श्रावाहनादि ॥

धूय ॥ दीय ॥ रुल ॥ नेवद्य ॥

यनिष्टा ॥ ॐ मनाइति ॥ जाय ॥ क्षाण ॥

सर्वयज्ञाय वीताङ्गं कयालावतिरु
विर्ग ॥ स्वप्नरुट क स्वप्नाङ्ग कृष्णयाल
नमाम्यहं ॥ श्रुगन्त्यादि ॥

१ वायूय पूर्वगल यति कलस ॥

अयणीमकुल ॥ निवीकृर्ष ॥

श्रुयकृर्ष ॥ ॐ गत्वाजामि ॥

श्रासन ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥

कृणाय २॥ ॐ वृहस्पत न्र ॥

यताकाय २॥ ॐ ॐ लु श्रासान ॥

ध्यान ॥ गजाननं यकदत्तं यद्यनाल

दहायर्म ॥ बहुशुजास्यदत्तं चै ॥ लण्क

४ यनभूषाविर्ष ॥ नागयज्ञाय वीगीव

विष्टिनाजानमाम्यहं ॥ ॐ गल यति मूर्ति

यथा २॥ ॐ श्रागून ॐ लु ॥

श्रावाहनादि ॥

धूय॥ दीय॥ रुल॥ नेवद्य॥
यतिष्ठा॥ ठं मताहति॥ जाय॥ स्ता॥
सर्वकार्यकृत्विं सर्वविधिनिदान
र्ष॥ विधिद्वयगलेभवेत् मूसा नूतन
माम्यद्॥ अणगन्धदि॥

१००॥ भानयश्चिमगुत्रकलस॥
भयणीमकुल॥ निनीकल॥
अयूकल॥ ठं तत्वाजामि॥
आसन॥ ठं धवस्यत्वा॥
ऊगाय॥ ठं वृहस्यत्वा॥
यताकाय॥ ठं अस्मानिनु॥
भान॥ कूकमानूददहावि अकयूद
कभानिष॥ सर्वसामुविवक्त्य भुगु
नृपलमाम्यद्॥ ठं गुत्रमूर्त्ये॥
ठं वक्त्यक्तानं॥ आवाहनादि॥
धूय॥ दीय॥ रुल॥ नेवद्य॥
यतिष्ठा॥ ठं मताहति॥ जाय॥ स्ता॥
सर्ववर्षसंकासं यस्माककवद
य॥ सर्वभक्तियारिहं गुत्रदवन
माम्यद्॥ अणगन्धदि॥

१ शिवभक्ति कलसयूजा ॥
न्यासकृत्वा ॥ अर्घ्ययोगयूजा ॥
मयगीमक्त ॥ तिनीकृत्वा ॥
श्रुत्यकृत्वा ॥ ॐ नत्वा जानि ॥
आसन ॥ ॐ धवस्यत्वा ॥
गङ्गा स्नाय ॥ ॐ सूर्यस्तुतिग ॥
यद्वा स्नाय ॥ ॐ यद्वा निनय ॥
ध्यान ॥ नावायतननाथ ॥ ॐ स्वच
कगदाधन ॥ लक्ष्मीसहित ॥ ॐ न
गङ्गायुक्तमासुग ॥ कभवासीसहि
ताय ॥ कभवादिमूर्तिय ॥ ॐ विष्णु
श्रियादिमूर्तिय ॥ ॐ श्रीशुभलक्ष्मी
ॐ वक्रज्ज्ञान ॥ ॐ विष्णुनवाटम ॥
ॐ नमः भक्तवायव ॥ ॐ हिनक्षत्र ॥
ॐ यक्षेनद्य ॥ आवाहनादि ॥
कृतनयविस्तन ॥
ॐ सुदृष्टभीर्वा ॥ ॐ श्रुत्य ॥ ॐ रूपा ॥
धूय ॥ दीय ॥ रुत ॥ नैवद्य ॥
यतिष्ठा ॥ ॐ मनाहृति ॥ जाय ॥ स्नाय ॥
शिवभक्तिस्वरूपाय सर्वलाकहिताय

व। त्वदीर्घवाद्यगमाय नमामुदित्व
मूर्तिने॥ अणुगन्धादि॥

१ न वयस्कलसूजा॥
गमयणी मक्तुलानित्रीकृष्टा॥
असूकृष्टा॥ तुं गत्वा जानि॥
आसन॥ तुं दवस्यत्वा॥
दावाचैष्टा॥ तुं दानादवी॥
गानक्षय२॥ तुं चत्वा निभृग॥
गक्षयतय२॥ तुं आगुनं ०० तु॥
दूर्जय२॥ तुं जातवदस॥
आकासाय२॥ तुं उरायिवतु॥
वायूव२॥ तुं दृष्टा दृष्टा वा॥
अणुकुमानाय२॥ तुं आनानियसि॥
धन॥ यद्वासनयद्मकन४ यद्मग ०
समद्विती॥ सकाशसकसृद्विष्ट द्विष्ट
जस्यासदानवि॥ आदित्याय ०० भूना
य अग्निपुत्राविदवताय२॥
तुं आकृष्टादि१०॥ आवाहनादि॥
कसनयानिस्तनर्ष॥ तुं कयातचि०॥
धूय॥ दीय॥ रुत॥ नेवद्य॥

प्रतिष्ठागुं मनाश्रुति ॥ जाय ॥ स्तुति ॥
कलिंगदससंस्तुति विभक्तसक संस्तुति
वक्तव्यकवद्वद नोमिन्नादित्यमस्तुति
॥ श्रुगन्तादि ॥

२ नागकृष्णयुजन ॥
श्रुत्यकृष्णगुं गत्वा जाति ॥
श्रासन ॥ गुं दवस्तुति ॥
ध्यान ॥ शुद्धसुटिकसंकास वनदंय
नधनिर्ण ॥ रुक्षसकविस्तुति ॥
यत्तु शुद्धगमिष्य ॥ गुं श्रुततादिसूक्तिय २
गुं नमास्तुत्यस्या ॥ श्रावाहतादि ॥
धृष्ट ॥ दीय ॥ रुक्ष ॥ नैवद्य ॥
प्रतिष्ठा ॥ मनाश्रुति ॥ जाय ॥ स्तुति ॥
शुद्धगमनिचूणय नानावस्तुविस्तुति
धृष्ट ॥ विषवालावकीर्तिय गत्वा नाग
यवै ॥ श्रुगन्तादि ॥

१ जकृष्णयुजन ॥
श्रुत्यकृष्णगुं गत्वा जाति ॥
श्रासन ॥ गुं दवस्तुति ॥

ध्यान॥ हुं यागवहुमहाकाय वीजपूज
क धानिर्ल॥ ह मातृकावसा राह्य धन
धान्ययतिष्ठु ॥ ह्यमवहुमहातज
सर्वार्त्तकारसारिणी॥ नत्तपूजुं क
लसं जकलीचनमास्यहं॥ हुं जकली
जकनमः॥ हुं मूक्तमूक्तवध॥

हुं पुष्पजकुल॥

धूय॥ दीय॥ रुत॥ नेवद्य॥

यतिष्ठा॥ हुं मनाहति॥ जाय॥ हाण॥

हमवत्तावलीयूक मूक्तमहालसारि

णी॥ गदायासिमहायक पुष्पमासिधना

विषय॥ दिव्यवस्तुयनिधनी सर्वार्त्तका

नरुषिणी॥ तमासिजकलीधवा सर्व

संवाहिकायिनी॥ मृगगन्धदि॥

१ शीलक्रीपूजन॥

मूक्तकली॥ हुं गत्वाजामि॥

म्रासत॥ हुं धवस्यत्वा॥

ध्यान॥ यद्वायनिष्ठिगात्तवी नीलाय

लदत्तपुष्पा॥ मित्दूत्रयमहर्त्तव का

नि योवतसंमिगा॥ यद्वासतसिर्गद

वी मुक्तमूक्तिकसंतिरं॥ मृदुदधन

ॐ नमो भगवते ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ
शुक्लवासादि ॥ आवाहनादि ॥
धूप ॥ दीप ॥ रुद्र ॥ नैवेद्य ॥
पुष्प ॥ ॐ मना इति ॥ जाय ॥ स्तुति ॥
सयाय सय शुभ याद दधि नूदि म
कर्म व हनि सूय मय क शुभ या वि ४
श्री क प्रिया वै वन द शय या निव वा
मृत् ॐ या जय गि सा कु नि सा क न ह ॥

१ गगायूषयूजन ॥ मत्स्यसूक्तवि ॥
वाक्म स्य तु या ला ॥ न्य ॥ य ॥ व ॥ क ॥ प्रिय
स्य च ॥ विल्व वै ॥ य ॥ सति दिष्ट ॥ मूढ स्या
दस्य नक्त ॥ ॥ जिन ४ क ॥ छुड ना ना रि ४
यमा ६ व ६ संजमा ॥ ॥ दार्णि ॥ म ६ गु
ल ॥ धा ६ क ॥ सुल ६ व ॥ वा ६ गु ॥ ज ६ न ६ त ॥ ४ ॥ क ॥ गु
वि ६ क ॥ द ६ जा ६ गी ६ ता ॥ जा ६ स ६ य ६ च ६ गु ६ न ६ गु ६ ल ॥
शुक्ल ॥ श ६ वै ६ व ६ क ६ लि ६ या ॥ सु ६ ल ६ क ६ द ६ द ६ म ६ गु
ल ॥ ॥ जी ६ न ६ व ६ क ६ वा ६ स ६ व ६ वा ॥ क ६ ल ६ मा ६ ग ॥
य ६ मा ६ ल ६ क ॥ ॥ सं ६ धा ६ क ॥ द ६ नि ६ धा ६ ग ६ ला ॥ य
क ६ म ६ रि ६ वि ६ वै ॥ स ६ र्व ६ य ६ ग ६ म ६ वा ६ च ६ ता ॥ गु ६ न ॥
नू ६ द ६ वी ६ नि ६ म ६ य ६ ग ६ ल ॥ या ६ ट ६ लि ६ क ६ वि ६ द्या
ॐ ॥ ॥ अथ न्यास ॥ अथ याग यूजा ॥

यूप वक्रविष्णु भिवात्मन लाकयाल
 स्यः ॐ दमासने २ वृष्य २॥ या द्यार्थः ॥
 ॐ गंत्वा जाति ॥ ॐ धवस्य त्वा ॥ ॐ त्वमस
 वक्र ॥ १२ ॥ ॐ वक्र जज्ञान ॥
 विष्णु व २ ॥ विष्णु व २ ॥
 नूजाय २॥ नमः ४ सकृवाय व ॥
 ॐ द्यादि लाकयाल स्यः ४ नमः ४ ॥
 ॐ गानानमिलु त्यादि ॥ १० ॥ धूय ॥ दीय
 जज्ञमानत रुननी गितन लूय यूप
 स ॥ ॐ स्वस्तिन ॐ लु ॥ ॐ यूवासूवाता
 ॐ यूवसुन यिन यूय ॥ ॐ वसाय वि
 या द्यार्थ गत्व पृथ धूय दीय ने वद्ये
 धूय ॥ ॐ वसूक्य ॥ १० ॥ वलि ॥
 ॐ गच्छ हि धर्म धजय कृताथ गयीम
 या वद भनीन यूय ४ विष्णु यध वद व
 भय कृ वक्रा वलि गृहा ॥ १० ॥ मम हत माति
 ॥ जज्ञमानत शालि मर्ष कृत्वा ॥
 ॐ कृवा श्रुति कृवा य ॥ ॐ मदा ॐ द्याव ॥
 मर्षादि यद्वना तूजय ध व ॥ ॥
 दहिम नू ग द यूय पुता द कृ नू स य रा
 मूल कृ दन य त्या र्थ रू मि द्या न न य कृ

॥ १ ॥ श्रुद्धयूयथागात्थं यूययय
 यथाहनु ॥ यथातयचुकोमान् यथा
 यवाइकेकग ॥ १ ॥ तत्सर्वं ममदवमिश्र
 यथाययथाहनु ॥ यत्तिसायान् तथा
 याग यत्तत्तथा ज्ञायनाज्ञाया ॥ १ ॥ सर्व
 थायु कर्णायय कर्मसामनसागिना
 सर्वकर्ममदवमिश्र यूय ॥ १ ॥ उयाडा
 यथावित्तिपूयमालावध्वा श्रुलिग्य
 नमग ॥ यवमयवर्न दुष्टि निर्वा
 यनदेत्वा ॥ जजमानवक्तुसहित
 न ह्यार्नयायमान ॥ जजमानस्य
 वक्तुताद्वक्तु विद्यमान ॥

॥ जथादवश्रुतकामनथबुलियूजा ॥
 गलद्यति ॥ उं नमागलेश्या ॥
 गमगमस ॥ उं श्रुयं नो दृ ॥
 कामानी ॥ उं जगद्वदस ॥
 वलियूजा ॥ उं गलनान्ति ॥ उं जगद्व
 उं नूमान्द ॥ य ॥ उं दृगदृग ॥
 उं नमावत् ॥ उं श्रुसंकाग ॥
 उं वाचोदि ॥
 यूय ॥ दीया ॥ रुत ॥ नेवद्य ॥ जायका ॥

गगनमूर्धन्यदासाधनं

ॐ आगयास्तु व॥ ॐ यविणस्तु ॥
यविणस्तु दनं ॥
ॐ विष्णुनाट ॥ यविणस्तु वत्तनं ॥
याज्ञिनाय ॥ याज्ञिनी याज्ञिनी ॥
ॐ यत्तुस्तु ॥ कस्तुनस्तु ॥
ॐ समस्तु ॥
ॐ दन्तीनाय ॥
ॐ यत्तुस्तु ॥ ॐ यत्तुस्तु ॥
ॐ सविस्तु ॥ ॐ सविस्तु ॥
ॐ सविस्तु ॥ ॐ सविस्तु ॥

आकृषीयनीतमक्षह्वय ॥

आर्क्षस्वली च नूस्वली प्रतर्प्य ॥

ॐ वल्लभं नमः ॥ कथं न समार्जुनी ॥

ॐ महीनाय नमः ॥ च नूसाधनं ॥

कृष्णार्जुनाय नमः ॥ उद्यमं नृत्वा न

मक्षज्जमानित्या नन्दनं कृ
दयत ॥

ॐ धन्ये नमः ॥ नन्दनं निधाय ॥

ॐ कृष्णाय नमः ॥ कृष्णं ॥

ॐ वनप्रभ ॥ सूर्यस्य प्रकाशं ॥

ॐ वृक्षस्य च ॥ वनप्रभ निधाय ॥

असिक् ॥ वनप्रभ निधाय ॥

वनप्रकाशं च नूसाधनं ॥

ॐ सूर्यदत्त ॥ कृष्णस्य च ॥

ॐ नमो नमः ॥ कृष्णस्य च ॥

ॐ नमो नमः ॥ कृष्णस्य च ॥

ॐ वनप्रभ ॥

ॐ वृक्षस्य च ॥

ॐ सूर्यदत्त ॥

ॐ नमो नमः ॥ ॐ वनप्रभ ॥

आर्यं पूजयित्वा रि कर्त्तुं कुर्यात् ॥
आर्यं वायुदत्तं दत्त्वा आर्यं वायुद
त्तं यत्नं ॥ आर्यं सूर्यगलेषीति सर्व
सायं वृत्तिरिति ॥

५ पूर्ववत्संस्कारं विधाय कर्म क
ुर्यात् ॥ ॥ ॐ धर्वा नाथा ॥

ॐ यूष्मा ऋतु ॥ ॐ सवि तुल्ला ॥

ॐ सवि तुर्व ॥ ॐ कृष्ण स्या कर्त्तुं ॥

ॐ अदि ह्ये वि ॥ स य वि र्गं क्लान
स्वप्नं ॥ तन्नाम कृष्णं वाचं ॥

दक्षिणे वाचं क्लान्स्वप्नं कृष्णं ॥

विष्णु व ॥ लक्ष्मी ॥ ॐ विष्णु वना ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ उय य मन कृष्ण

मादाय ॥ ॐ धूर्वा सि धूर्वा ॥

तन्नाम अग्नि दस क्रिया ॥ ॐ सकृत् ॥

ॐ स्वस्ति न ऋतु ॥ ॐ माहि र्गं ॥

ॐ यानां य स्वाहा ॥

ॐ एतं स्व विष्णु ॥

ॐ ऊर्ध्व साम ॥

ॐ ऊर्ध्व सामावा ॥

ॐ आर्यं न ॥

ॐ क्लीं वेष्णुवाग्यनामायनामक
क्षुयेस्वाहा॥ वद॥ ॐ कायस्वाहा॥
नामकनर्ण॥ ॥ ॐ क्लीं कृष्णाय
ददयाय२॥ वद॥ ॐ डारुलनी॥
रुलवातर्ण॥ ॥ ॐ क्लीं कृष्णाय
ददयाय२॥ वद॥ ॐ श्रुतयर्ण॥
श्रुतयातर्ण॥ ॥ ॐ क्लीं श्रुमायर्ण
दृष्टाकनक्षयस्वाहा॥ वद॥ ॐ
मूर्धनर्णदिवा॥ दृष्टाकनर्ण॥ ॥
ॐ क्लीं श्रुमायर्णदृष्टाकनक्षयस्वा
हा॥ वद॥ ॐ रुद्रकर्ण॥ क
क्षुर्ण॥ ॥ ॐ क्लीं वर्णायक
वरायवर्णवन्धनायस्वाहा॥ वद॥
ॐ यथेमावर्णकल्याणी॥ वर्ण
वन्धर्ण॥ ॥ ॐ क्लीं श्रुमायसमा
वर्णितायस्वाहा॥ वद॥ ॐ श्रुक्
॥ समावर्णर्ण॥ ॥ ॐ क्लीं कृष्ण
यददयायविवाहायस्वाहा॥
वद॥ ॐ श्रुक्कीजजामह॥ वि
वाहा॥ ॥ ॐ क्लीं श्रुमायउमन
जाणायस्वाहा॥ वद॥ ॐ काक्षुक्

ॐ ॥ यमन्ता ॥

ॐ ह्रीं वागीश्वर्यै नमः

ॐ श्री वागीश्वराय नमः ॥

स्वाहानं श्रुतिदशकं १० दद्यात् ॥

गंगाधरः ॥ मया दूरय निवार्य म

क्रिहलाश्वत्थः कृष्णः वातः

वक्तुं यथांल्लोकास्तनयनिष्ठासक

वस्तुतः वदित्वा अवादिदम्कि (६)

कथं। स्वाहायतिष्ठिणावाम् श्राम

कलु सात्त्विकात्रयी ॥ॐ अग्निमूर्त्य

ध्यानपूर्वक २॥ आवाहनादि योद्य

पूषादि षूय दीयने वंछा न ॥

शूषादभसनिधमादाय॥

ॐ नमो वासिष्ठा ॥

नदी डाकाना

चकलयन्तागनिधाय॥

गिरिकुलोवकादृष्ट्वा॥

मनयजादतय स्वाहा॥ वृद्धमजावतया॥

महाव्यादिति ॥३॥

ॐ संसृष्ट्यव॥

ॐ ह्रीं स्वस्ति ॥

भूगणय भृष्टि कृतय
 जगुवदाय ॥
 वृथिवे ॥
 भूगणय ॥
 जगुवदाय ॥
 वायुव ॥
 भूकनीकाय ॥
 सामवदाय ॥
 दिवस्वा ॥
 सूर्याय ॥
 भूधर्ववदाय ॥
 दिगस्थस्वा ॥
 वरुमस ॥
 ॐ ह्रस्वादा ॥
 ॐ सुवस्वादा ॥
 ॐ स्वस्वादा ॥
 ॐ त्वन्ना भूमे ॥
 ॐ दमघीभामाया ॥
 ॐ सत्वन्ना भूमे ॥
 ॐ दमया भूमे ॥
 ॐ जगत्सर्ग ॥
 ॐ वरुणाय सवि

ॐ विश्वकर्मा ॥
 मरुत्त ॥ स्वर्ग
 स्य ॥ ॐ
 उदुक्तम ॥
 ॐ दैववृक्षया
 दातय गणयति
 दूतादि दृगाद्
 निविद्य ॥
 समस्तुर्विद्य ॥
 दृगाद्गति युष्म
 ॐ सकाग भूमे ॥
 वादियागत्तर्जन
 ॐ वरुण ॐ वरु
 जवतिलाक ॥
 गस्तुल समीधद
 य श्रीरुल नका
 वरु नाविकन
 दृगाद्गन्धमधू
 सक्तना भूकमा
 लाये यागनि
 धाय जजमा
 तन तमस्काव

सिंहा ४८॥

८०५ थर्वदाय

ॐ ह्रीं नमः ॥

श्रुतयः॥

जमा य॥

नैमल्ल्याय॥

वत्सल्य

वायुवशा

कृष्णाय ॥

ॐ भूतनाथ ॥
शूनकाय ॥
वृक्षन ॥
वैष्णवानाथ ॥

१ पूर्वदात्र ॥
साकिगानक्षय ॥
भुमरुलदात्रा ॥
गुलाकाय ॥
कगशुभय ॥
मगुवदाय ॥
जयाय ॥
विजयाय ॥
ॐ लाय ॥
ॐ गगनमिन्द ॥
रूडाविकुणवालाय ॥
रुतुककुणवालाय ॥

शुभयस्वादा ॥
ॐ शुभिसूक्ष्म ॥
शिवनाकककुण ॥

१ दक्षिणदात्र ॥
गुणिगानक्षय ॥

१ सुखागुदात्रा ॥
स्वलाकाय ॥
गुतायुगय ॥
जशुवदाय ॥
वक्षाय ॥
यवक्षाय ॥
जमाय ॥
ॐ जमनदक्षि
गुतादिकुण ॥
शुभिवनालाय ॥

नेमस्याय ॥
ॐ जन्तद्वी
वशुवस्वादा ॥
ॐ वशुयम ॥
शुभिजिज्ञाकुण ॥

१ यशिमदात्र ॥
निष्ठगिगानक्षय ॥
कल्यानदानाय ॥
जनलाकाय ॥
दायनरुगय ॥
सामवदाय ॥

रुद्राय॥
ॐ रुद्राय॥
जी स्वाहा॥
लक्ष्मी स्वाहा॥
वनूक्षाय॥
ॐ नमो नमः॥
धनार्थि कणाय॥
कालाकाय कण॥
वायव स्वाहा॥
ॐ नववायु॥
गणपतय॥
ॐ गणनां त्वा॥
ऊणया लाय॥
ॐ नमो नमः॥
कालवृष कण॥

१८ रुद्र दान॥
शुभाङ्गानक्षय॥
गुरुदा दानाय॥
सत्यला काय॥
कलिङ्ग नय॥
मृधर्व दानाय॥
कण्ठि य स्वाहा॥
धृति य स्वाहा॥

कूचवाय स्वाहा॥
ॐ कूचिदंग ज॥
विभव कणाय॥
जक याद कण॥
ॐ भनाय स्वाहा॥
ॐ श्रुति त्वा नु॥
गुनव स्वाहा॥
ॐ वक्रज हान॥
शिमवृष कणाय॥
श्रुति विवतय॥
ॐ श्रुति विवत॥
उद्धा विवतय॥
ॐ उद्धा न स्यात्॥

१ श्रिवभक्ति यात॥
श्रिवाय विष्णुव
ॐ विश्वाननाद
भक्त य लक्ष्मी॥
ॐ श्री य गलक्ष्मी
श्रुति याय स्वाहा
ॐ श्रुति धूत॥
नागना जाय॥

ॐ नमो भगवते ॥
 जगज्ज्योतिषा ॥
 ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 जगज्ज्योतिषा ॥
 ॐ नमो भगवते ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 लक्ष्मीस्वामि ॥
 ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
 मृत्युञ्जयाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते ॥
 जगज्ज्योतिषा ॥
 कर्मन थंजित ॥
 योर्गो भगवते वि
 यः ॥ भुवनाग
 योर्गो विद्य ॥
 नागकुलनाग
 यतः स्थाय ॥ ॐ
 नमो भगवते ॥
 समस्तैः कृता
 यो विद्यः ॥ गिला

भगवते नमः ॥
 कलस्योतिषा संज्ञा
 भगवते ॥

१५ वलं सार्यं ह
 जगमानस्यं व
 कृति कालस्य च
 वकिसं कालात्
 कृत्स्नं तय ॥
 कलस्योतिषा ॥
 दवतिवर्द्धलदि
 यलाय लका ॥
 गगावाक्कलन
 न्यासादि श्रुत्या
 गयुजा ॥ आत्मयु
 जा ॥

पूर्वोदिवसुसम
 दयुजा ॥

पूर्व॥ नकावर्तुनागनाड्या १॥
ॐ समूहजया॥ ॐ कानसमूहाय १॥
दक्षि॥ कृष्णवर्तुनागनाड्या २
ॐ समूहायत्वावाताय॥ ॐ दधिसमूहाय २

यन्त्रिम॥ ह्यनवर्तुनागनाड्या १॥
ॐ समूहादूर्ध्वमधू॥ ॐ ॐ कृष्णसमू
हाय १॥

उत्तर॥ यानवर्तुनागनाड्या १॥
ॐ समूहाय॥ ॐ गर्शदकसमूहाय १॥
मृत्तिकायूजा॥ ॐ यावावधीयूही ॥

दक्षिण॥ ॐ तत्ताजामि॥ तिलड
याननगजदत्तमृत्तिका॥ ॐ त्वमग्ने॥
चनिगा॥ वाल्मीक॥ ॐ श्रुथाधवीमधू
मती॥ जयत्यायानावान॥ ॐ श्रुवर्तु
नति॥ कालागिनि॥ नाड्याय॥ ॐ ना
जकसध्व॥ वनूक्षय॥ यवर्तुताय ॥
ॐ धवीनायाश्रुण्वय॥ युयागग्ने
मृत्त॥ ॐ श्रायन्तेष्ट॥ समिधमृत्त॥
ॐ वनूक्षस्यास्त॥ गार्थ॥ गङ्गासृत्ति॥
ॐ श्रुश्रुक्रान्त॥ विष्णु॥

कृसादक॥ ॐ वृक्षतस्य॥
 नलादक॥ ॐ वृक्षवधभुना॥
 वस्यादक॥ ॐ हविष्मतानि॥
 रुलादक॥ ॐ वाक्कलनीजा॥
 गलूलादक॥ ॐ दीर्घायत्वा॥
 गल्मादक॥ ॐ गन्धदाना॥
 मूसादक॥ ॐ मूदमायय॥
 तीर्थदक॥ ॐ मूममगङ्गा॥ या॥
 दूग्ध॥ ॥ ॐ वयदृधि
 दधि॥ ॐ दधिकाप्राति॥
 दूता॥ ॐ गङ्गातिभु॥
 मधू॥ ॐ मधूमाता॥
 मङ्गन॥ ॐ मनादयी॥
 उदक॥ ॐ यक्षेनद्य॥
 यक्षेगव्या॥ ॐ यविण्णु॥
 सरुसुधन॥ ॐ वसायविण्णु॥
 मूर्धादक॥ ॐ गस्यायविण्णु॥
 वन्दन॥ ॐ जदद्यकव॥
 सिन्दूर॥ ॐ त्वङ्गविष्णुदा॥
 मूर्तेरु॥ विधिपूजाया॥
 सग्नन॥ ॐ दधिकाप्रा॥

ॐ वृक्षवधभुना॥

पूष्य॥ ॐ हारु लनी॥
 श्रीभीर्वादि॥ दव श्रुत कमन॥
 हरु श्रुतधि॥ यतिष्ठा॥ दवविस
 र्जन॥ ॐ उक्ति सुवक्त्र॥
 जजमानस्य दव सलुययन॥
 ॐ स्वस्तिना॥
 नैमत्य दान सलुय दीर्घयन॥
 वद्वि कल सन दक्षिण॥
 धलिलन॥ उक्तन॥
 दवतय॥ विधिकालायन॥
 ॐ श्रुतारुडा॥ दवसुयन॥
 ॐ तमः सक्त वाय॥
 श्रुत सक्त सुयन॥ गृहायकवक्षदि
 ॥ ॐ काकु काकु गृयनाहति॥
 निजा कल सक्त यन॥
 ॐ वायव्य वाय॥ त्यासयाय॥
 दववित्तन साधनय॥
 ॐ श्रुत तलाय॥ ॐ विष्णु कलान॥ या
 ॐ विद्या गलाय॥ ॐ विष्णु वनाट॥ द
 ॐ निवत तलाय॥ ॐ तम सक्त वाय॥ जि

लामविलासनसा द्वा साधवय ॥
दवतिडा कायणन वूय ॥
आहुतिवियणित्वन ॥ लामविला ॥ ३
तिडायाण आहुतिविय ॥ पुंयनाकुन ॥
लिर्वसना दवयानागमहाल ॥
तिडाकलस अरिहय ॥ पुंममकद ॥
यकैवलिसुयनदव अय ॥
पुंमल्लतात्वा ॥ पुं अम्व अम्विक ॥
पुं अथेतातयो ॥ पुं दृष्टिगया ॥
पुं विस्वा प्रकृता ॥ अणमत्वादि ॥

न्यासयाय ॥ आहुति ॥ पुं विजाद्राद
दि ॥ पुं मद्रसुभीषा ॥ मित्र ॥ पुं डे
जागता ॥ मित्रा ॥ पुं अष्टमिसाता ॥
कवच ॥ पुं अष्टमिरुग ॥ नग ॥ पुं
तमस्तुद्र ॥ अम्व ॥ पुं यून ॥ ४
लित् यकैगलित् चतुर्विंशतिग
लित् षट्त्रिंशतिगलित् दवता
साधय ॥ यकैसूणकातचिस्व
हयावग ॥

ननादवदमक्रियायाय ॥

॥

ॐ ह्रीं ज्ञानिक लयनाय स्वाहा ॥ ॐ कण
स्य ज्ञानि नमः ॥ ज्ञानिक लयना ॥ ॥

ॐ ह्रीं गरीधनाय स्वाहा ॥ ॐ गरीधना
य स्वाहा ॥ गरीधना ॥ ॥

ॐ शुक्ली मयवनाय स्वाहा ॥ ॐ शुक्ली
मयवना ॥ शुक्ली मयवना ॥ ॥

ॐ ह्रीं भीमकानयनाय स्वाहा ॥ ॐ माहि
रूमा ॥ भीमकानयना ॥ ॥

ॐ ह्रीं जागकर्माय स्वाहा ॥ ॐ जाग
कर्मा ॥ जागकर्मा ॥ ॥

ॐ ह्रीं क्रीतकमनाय स्वाहा ॥ ॐ
क्रीतकमना ॥ क्रीतकमना ॥ ॥

ॐ ह्रीं नामकनक्षाय स्वाहा ॥ ॐ
नामकनक्षाय ॥ नामकनक्षाय ॥ ॥

ॐ ह्रीं रुलयात्राय स्वाहा ॥ ॐ जा
रुलयात्राय ॥ रुलयात्राय ॥ ॥

विष्णुजी नूतनवासनाय ॥ ॐ नू
यगन ॥ नूतनवासन ॥ चन्द्रवर्णन ॥
यथा^{दुष्प्राप्त} कौतूहलकनक्षयस्वाहा ॥ ॐ मूर्धा
नन्दिनी ॥ चूणकनक्ष ॥ लू मूल ॥ डाहा
मूल ॥ लूखन ॥ डाहाखन ॥ वाङ्मरुता ॥

गत्तविठुल्लो कर्णरुदायस्वाहा ॥ ॐ
रुडक^{कर्ण}रु ॥ कर्णरुद ॥

वप्रलक्ष्मी वदकर्मयस्वाहा ॥ ॐ ज
मंवाच ॥ वदकर्म ॥ डाताविरा ॥
मयणी वदान ॥ ॐ मयणी ॥

रुर्मदवल्ली वतवन्धायस्वाहा ॥ ॐ वत
नदिका ॥ वत वन्धनी ॥ ॥

स्यधीमहि क्ली समावर्तनायस्वाहा ॥ ॐ
कृष्णत ॥ समावर्तन ॥ ॥

विष्णुजानकौ विवाहायस्वाहा ॥ ॐ वि
यम्बकीज ॥ विवाहा ॥ सलरुणिकाक
खायक थकरुतिनीकय ॥ कायर
ननजानन कवचावक ॥ वीधवत
कृय ॥

पुत्रादयात्तुं उमन जाणाय स्वाहा॥
तुं काष्ठुत्तु काष्ठुत्तु॥ उमन जाणाय॥ सि
द्धनत हा न॥

दवपतिं श्रुतिविय स्वस्वमकुल
स्वस्ववदन॥

श्रुति कुजापविथ दवर्त्त॥

श्रुति १०४॥ मना हृति॥ प्रतिष्ठा॥

दवविसर्ज्जित॥

थना विसर्ज्जित पूजा॥ नवकथार्थन
वला इव वाव धि नहात॥

धि नवावर्त्त या य॥

श्रुत वालाह कल्प्यादि॥ गुरुल॥

वक्त्रादि यनम श्रुता विजयत दवा
समस्मात्तथा॥ सूर्यादि गदला कवा
लविजया शीता गदला दयः॥ कुरु
सावदूक धर्म्म हननी गङ्गा सूत ४ सि
द्धिदः॥ सखा दव गुरु श्रुतः सूत गु
नसंज्ञान कला हनि ४॥ यावच्चन्द्रश्च
सूर्यश्च यावत्स्मितावमदिनी॥ ताव
द्भवतु मे नित्यं सुखं वाञ्छे जिवा

कृया॥ स्मिन्नाखवदुदवत्वं दवाना
 मन्त्रिवाकसम्भायावच्चलार्कमेदिन्या
 नावत्वंचस्मिन्नाखव॥ निर्विघ्नं कि
 यागनामसदाकल्याणकावय॥ १॥ श्री
 ययश्चैकनसौक्तिं सदास्वस्त्ययन
 कृत्वा॥ नचमात्रीतचदृशिकं नत्रा
 मन्त्रचविष्णवात्॥ नत्राष्टरयस्य
 गच्छेयनचकुर्यसुथ॥ ०००
 एतागमुज्जैति यनएचयनगि
 ति॥ ॥ ॐ नमाद्याविनस्मिन्
 म्रवत्तुवकीलंकीस्वाहा॥
 ॐ स्मिन्नाखवविष्णुग॥ ८

थर्थंगहृतिं स्मिन्नाखमाला॥
 दवयूजावदसह॥ यासादसंक
 ल्प॥ धंजाकृतितक॥ धजादान
 वाक्क॥ म्रयादि॥ ॐ रुगवत्तव
 दवम॥ एलाकमन्त्रुजुता॥ जथा
 मक्काधर्जदत्तं यीयतां यनमश्न
 ॥ ॥ श्रीमहाधर्जदद्यात्तुत्वावाच
 वेत्तकिर्ग॥ किक्कियूगसंयत्नीम

2

सूत्रेण स कुण्डनात्रिकर्लेङ्गवित्ताङ्गकृत्यात् ५

六

दूयक ॥ यद्वक ॥ किम्विरुत्त ॥
चत्तनगुति ॥ गुत्तन ॥ सर्वोवधि ॥ क
स्तत्त ॥ मूल ॥ पक्वान्त ॥ ॐ ॥ दूर्वा
श्रुत ॥ ययसा श्रुत ॥ न भर्तु
यं श्रुया ॥ वाक् ॥ श्रुत ॥ संकल्प
॥ दिग्भवेन ॥ ॐ ॥ दूर्वा ॥ वा
लियुजन ॥ दूर्वा दीय दृष्टिका ॥ ॐ
य ॥ भक्तिक न ॥ ॐ ॥ १० भक्ति ॥
महायादति मक्त ॥ श्रुत ॥ न भर्तु
श्रुया ॥ १० ॥ ॐ ॥ जवम्वच य
॥ ॥ दूर्वा ॥ मक्त ॥ श्रुत ॥ ॐ
स्वस्व प्रय स्वाहा ॥ ॐ ॥ त्वन्ता श्रुत ॥
ॐ ॥ त्वन्ता श्रुत ॥ ॐ ॥ श्रुत ॥ ॐ
ति ॥ ॐ ॥ यत भर्तु वन ॥ ॐ ॥ दूर्वा
म ॥ ॐ ॥ याहिना नृपय स्वाहा ॥
ॐ ॥ याहिना विश्ववदस स्वाहा ॥ ॐ
यत्त यादिविश्ववस स्वाहा ॥ ॐ ॥
व ॥ याहिना कुपो स्वाहा ॥ ॐ ॥ न्यूना
तिवर्क श्रुत ॥ ॐ ॥ श्रुत ॥
क श्रुत ॥ ॐ ॥ श्रुत ॥
वाक् ॥ नृपय स्वाहा ॥ ॐ ॥

ॐ सर्वकदम्बो कल्पयद्विदिगयथादि
नः स्वाहा ॥ ॐ वेभ्रानवायविद्यदुःश्रु
तद्विगायधीमहिर्गन्तावाहिः ४ यथा द
याग ॥ ॐ धवकाग्येनसावयजनम
सि स्वाहा ॥ ॐ मन्त्रकाग्येनसावय
जनमसि स्वाहा ॥ ॐ विहकाग्येनसा
वयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ आत्मकाग
्येनसावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ एत
त्पुनसावयजमसि स्वाहा ॥ ॐ य
थाहमनाविद्याकैकानयथाविद्यान्
स्य सर्वेयेनसावयजनमसि स्वाहा ॥
ॐ स्वस्ति नः सुवि ॥ ॐ यय ४ यथि
या ॥ ॐ विश्वावनाट ॥ ॐ अग्निर्देवता
॥ ॐ यो ४ भक्ति ४ ॥ वाक्त्रलदक्लिष्टदा
नं ॥ वावर्तं ॥ वलिहवनर्षं ॥ दभवलि
यस्तुययग ॥ ॐ कामकामदध ॥ स
पवयाभर्तं ॥ ॐ समिधियान ॥ यवि
गमावर्तं ॥ गतप्रक्षिताव ४ जिनसिभि
केशयग ॥ पूरुकावयग ॥ यथा कार्य
पूरुहगि ४ ॥ ७ ॥ पूरु आर्तसा ॥

श्रीमिश्रीगीर्वादी॥ॐ श्रीमिश्रीवि॥ श्रीवा
र्यागीर्वादी॥ॐ यस्याकर्म॥ॐ डलि
पुत्रकलस्य॥ यविणभावनी॥ॐ वि
धुवनवाट॥ उक्तादकर्मभावनी॥ ॐ
कल्याणविमोक्षेति॥ॐ श्रीधाराश्रयात्॥ य
दीनारिषक॥ॐ सन्निहितम्॥ श्रीक
याटकमंडयमनवशक्यात्॥ॐ त
नूयाश्रयसि॥ॐ मध्यामदव॥ हस्त
संयतनी॥ॐ प्रायश्चजम॥ रस
नागिलकंक्यात्॥ॐ यहुयहुगकु
॥ श्रीधारादकन श्रीकृतवधनी॥
ॐ गकुगकुसुनसष्ट॥ यहुविसृजनी
॥ उक्ताकाष्टदयशक्यात्॥ॐ कृता
यकर्मल्लाहा॥ॐ श्रीकृतयकर्मल्ला
हा॥ मध्यामकंक्यात्॥ महाव्याध
तिमक्त॥ गान्धर्वदद्यात्॥ न्यासलि
काय॥ॐ उदयतमिति॥ यहुविसृजनी
॥ वलि॥ थय२ सञ्जाय॥ मूर्तिक
लसदवक्ता॥ कलेसमालकथय२
सञ्जाय॥ ऊहामाननृवक्तु॥ निव
भक्ति कलसारिषक॥ चन्दनादिश्री
गीर्वादी॥ॐ ति

ॐ पुष्पकृति ॥ ॐ दयागम तु विदारुं द्विवागम तु मित्रु मिगमनसस्यति । ॐ मंदवयक्तुं स्वा
दावागम ॥ ॐ अयायस्व समतु गविश्वगम वृक्षम् ॥ रुवावा जस्य संगथ ॥ सग
यया ॐ सि समूर्य तु वाजा ॥ ॐ वृक्षान्य रिम गिषा रु ॥ अयायमाना मृगता यशामदि विप्रवा
ॐ सुकृमानि विष्ट ॥ अयायस्व मदि क म साम विष्ट रि ज ॐ तु रि ॥ यवान ॥ यथ सु म ॥ सखा

दुध ॥ आनवत्तामनाय मत्य वमा द्वि त्सध कृ त ॥ मृत्नर्त्वा कामया गि ना ॥ तु यन्ता मृ मि न
स्तम विष्ट ॥ सु कि ग य ॥ वृथ क ॥ अन्त काम या र्थे मि न ॥ अग्नि ॥ विथ ष्ध म म सु को मा ह त स
रयस्य सन्ना ऊका विना जा गि ॥ ॐ यय ॥ वृथि र्था य यडा ष्ध म व या दि च न र्नी क य या ध ॥
ययस्व गी ॥ यदि ण ॥ सनु मर्क ॥ ॐ दयस्य ता स वि रु ॥ य स य धि ना र्वा क्र र्था वृक्ष रु सा र्या म ॥

ॐ अक्षिना के सद्य न गज सा बुद्ध वद्वे सा या रि विष्णु मि स न स्वये रे सद्य न वी र्णा या ना
द्या या रि र्षि वामी तु स्य न्दिये ल वला य प्रिये य ल स रि विष्णु मि ॥ ॐ द्रु य दा दि व मू मू वा
न ॥ स्थि त्वा स्वा मा म वा दि व यू र्ग य विष्णु ल वा ड मा य ॥ सु ध लु मे न स ॥ ॐ द्रु य न म स स्य नि
स्व ॥ य प्थ क ॐ रु न म ॥ द र्व द व गु मूर्ध म ग न्म ड्का नि नू ल म म ॥ ॐ प्री ष्ठि त ल क्षी ष्ठ ग य त्वा म
हो ना गु वा र्ध न क गु ति वू य म धि नो ब्वा रु म ॥ ॐ कू नि बा ल म म ॐ बा ल स र्व लो कं म ॐ ब्रा
ह्म ॥ ॐ न मा बु द्ध ल न म ॥ स्व र्ग म य न म ॥ पृ थि वी न मा डा स धी स्थि न मा वा च ने मा वा च स्य ग
य न मा वि क र्थ म रु ग क था मि ॥ अग्नि नि रु ध सा म स्य द वा ना मू ल म य ल ॥ वा नी क्य न अ
साम हि क वि द्या मि यु ग न्व ग ॥ ॐ य द वा सा दि द्या का द ग म्बु पृ थि वी म ल्क्ष का य ल म्बु ॥
अप्सु कि ता म हि ने का द ग म्बु ग द वा सा य रु मि र्म इ स र्व ॥ ॐ यू न स्त्वा दि द्या ब्रु दा य स वः

[illegible]

नवर्णमरुवगतवर्षिगमर्दात्तादि तर्ग्रीर्षं कुरु वल्लु नमोस्तुते ॥ अस्मात्प्रयत्रिदस्य मां साग
 नस्यामयायथम् । ॐ तुष्टुर्गुणं ददातु वनूगः त्वमरिषिः अरिषिः अरिषिः अरिषिः अरिषिः अरिषिः
 अरिषिः अरिषिः । कथिवदती सर्वरुदी अरिषिः अरिषिः अरिषिः अरिषिः अरिषिः अरिषिः
 अरिषिः अरिषिः । यावदादित्यस्य गतिः यावदादित्यस्य गतिः यावदादित्यस्य गतिः यावदादित्यस्य गतिः
 सरु ॥ अथ न केन युक्ता न लभारु नाका न जीवति । यन्नयामूय काना लभं यद्गीवति स जीवति
 नृषः सरे नरुदं स न दं न न त्वं विपुलं न पृथिवी त्वं तु अरिषिः त्वमं कुरु गं मं कुरु न ॥
 मष्टुलं सारुं तु नमो रुगवर्गत्यादि ॥ ॐ तुष्टुर्गुणं ददातु वनूगः त्वमरिषिः अरिषिः अरिषिः
 त्वमरुदाः स्य युक्ताः स्मादि त्यादि ग्रहं भव सति तु विसदाः अन्तर्दयस्य नृयाः ॥ अन्तर्दयस्य गम
 तिश्च गलगु वृषदकाः ॥ अरिषिः अरिषिः अरिषिः अरिषिः अरिषिः अरिषिः अरिषिः अरिषिः
 गुरुमु ॥ नत्वा षष्ठी सकलार्थं अलेन वृष्टुं स्वच्छं यत्नवसूक्ष्मं रिते तपूष्यमालां । अरुं वृ

आह विषयमूनिरिष्यणम्। खीकं रुमूर्तिनिवणकि यूर्गनमामि॥ श्रीमद्वक्तृनिपादि
 सुवचननिर्गदवदर्वमनाहं नाकर्णणममूर्जगतिगुरुकर्जसगणवीडोवहर्ग
 यकानागमगणारि मूर्तिगणसकलसिद्धिविद्याधनेर्वा वन्देदिग्यालोकं दणननयन
 विग्रहं काञ्चनारं॥१॥ गंजाख्यं खातिविधं एवकल्लसुर्वयावर्नरुडुवहर्षं सदीर्घं व्या
 कविष्यं मूनिवचनमिर्गशाखर्वणकिरुक्तं। इकाष्टमखकनात्मा कलमयिवनिर्गदसु
 क्कामिसुक्तं वन्देवृक्षगुहं द्विजनिखिलगुनं लभविकर्णरवर्क॥२॥ याम्यदिग्यालनाथ
 सकलरयकनं सुनिरुक्तं निषण्णं नीलं व्यामान्वृगद्यतस्मिन् वदनवर्णमुदलुग्यानि
 सीयासीसानवकसमसमणमनं लभकर्वं गुह्यं गतं सुखेन्दुधर्मनाडी निखिलयितृपतिं लभसि
 दुसर्वरुगं॥३॥ गीकूदद्वं कनालेंदणनणधर्वनं गुणिलगुधार्त्तं स्मृणममृदुजानां हलि
 गं००० वगनं विष्णुर्निर्गसमस्तं। यल्लुहानं कयालेंदयलेंदमकिर्गखञ्जसर्गकयाणि गम्यन्द
कव

यापुधनं सकलरायकर्मसिद्धिदयगर्मम् ॥ ४ ॥ गन्धर्वकीनावद्यार्तपुमृदितवदनविध्वल
कायनादं रूपाङ्गातासूत्रिर्गमृदुर्लभिकेनगमवन्दितासूत्रदीर्घः । रुक्मविचयसुयाङ्गगिरु
वलाविदितं माकवस्यन्यनम् ॥ तन्मन्त्रेणक्तवृयं द्रविगलयद्वनवानुनीदिग्यतीर्णः ॥ ५ ॥ या
लयागस्ववृयङ्गदयितलेसत्सर्वरूपवृत्तीर्णं ससावागर्भयसिद्धपनमगुन्नगर्नविध्वन्य
मरुर्णसिद्धसंसिद्धदं धडललितेगधर्तस्यामद्वर्षादलार्णं वन्दसानर्गकर्णुवृजिनरयकुरुनं क
मर्दलालसाहं ॥ ६ ॥ स्वर्षश्चाधर्षमयीर्नरुवसखयनमंकाञ्जनार्णसूदीर्घं कथुर्नदीर्ममति
मयकटकेऽककलेष्मपियर्षं । सानन्द्यस्यनस्कृतववधर्नगाडनाडं धनेर्णं गयर्कनोमि
निर्णयिपूतकटाकदंष्ट्रीदकापुयधनं ॥ ७ ॥ ग्नीमर्नयूधकर्णुवगुडालगादकिंलजाश्र
मालां मोतोखलुन्दर्गमसरयकवधर्नसर्वलाककनार्थं । याभकलीशिष्टलं गिनयनसनसं
विग्रहं वलुनाडं । तद्वर्षनोमितिर्ण्यद्रविगलयद्वन्त्रागमृकिपुदन्त्रा ॥ ८ ॥ ग्नीमन्नीलेन्दुरासं

छिजधव सनर्थ हाटकारं पुदीर्यं चकं गदिष्ठुयाले निदिगवनगदा कोमुगं या अइ नो। द
 वेशे लाअ नार्थ शिदगगल नूर्ग पुत्यरुं नमरुक्क नत्वा अराग संसुं कमलेम नृगदं लाले सार्ता
 यदरुं ॥ ६ ॥ पीतं एभया चनारुं पुरु सिग वदनं सर्वला कानू कर्म अर्न संसकं वेग स्त्रे न सुन
 नूर्ग यन्न डी युक्क मूर्ति । पुसा को वरु नी र्यधृग कल क मयी अन्य कलु यु कालुं हं ससुं सा वेशो
 र्म यन मरु नूर्ग न धा द्वर्ग नो नि ति र्य ॥ ७ ॥ नमो इमय ॥ गं जा ख मि ति ॥ ॥ युक्क विष्णु छल क
 कले ति यम कना न कया ली समीना यक एभ न क दू र्म ए रु गल सदि र्ग र्म र्ग सर्व ना ग ॥ ८ ॥
 वा ॥ सिद्धि संद्या दू निग रय रु ना धनु सु यो धि दवा ॥ या गित्य सर्व दवा ॥ सुन वन स रु ना ॥
 पा रु व ॥ सर्व दवा ॥ यथ यक्क मूर् संसु दि दिदि ग समा संसुि गा दय ता या ॥ क लु वा व किम
 अ सक ले य नि ड ना मरु ले क्खि ले वा । गं सर्व सुनु दवा अरि म ग वन दा मनु स को ष म्
 डा मू डा पू जा वि भना य ड न य नि वृ ग ॥ की ल दो षा ॥ क य नु ॥ सु षी गा सर्व दवा रु वि स क

२

१

[illegible]

यूयगिऊनाजातिदाषाविनागं लोकानीरुकिगडापुनवतुविपुला रुकिप्रषालिवाभु ॥
अस्मदाष्टाधियति४वक्त्रसिद्धिबहु। यऊमानस्यअमूकयहुसंपूर्णनिमित्तार्थेन यथालभक्रा
कणुरुरुत्तदायिनारुवहु। यऊमानीनामचतसिंदूनमहु। सगलस्यविद्यानालभमायूना
वाअमेष्वर्थऊनधनलेक्मी४सक्तगिसक्तानवृद्धिबहु ॥ सक्त४सक्तनिबक्तनसूक्तिनाविश्व
स्तयायादयानाजान४युगियालयक्तिवत्सुधधर्मस्त्रिगासर्वदा। कालेवर्षगिबर्षिलभडातमूवस्त
रुयऊभादिगाभादकाद्यगवृद्धिवाथवस्तुद्वजोष्टीयमादासदा ॥ स्वक्रियडाथ४पुगियालय
वैन्याथलमाग्नगमहीमहीग४गमयाक्रमल्य४पुनमहुनिखंलाकास्तमस्तस्त्रिनारुवहु।
कालेवर्षरुवर्ज्व्य४वृथिवीगल्यलभतिनी। दक्षमर्थकारुवदिगा। द्वाक्रमस्तुतिरुजा४ज
हानास्तानगावारुगमक्रगयत्कुरंगगिनिर्कमडावृजा। वधमर्नकुमयडातदि। ओसागुमग्न
महु। यरुयरुषूदाषादुविनक्रगिंसर्वलोककनाथसर्व४संपूर्णमहुदातेनक्रगयक४

प्राञ्जलिः सूयसन्नः॥ दाधेनवागनवशकिरावावापत्यतावामूनयः पुतावा। न्यूनाधिकम
कुक्ष्याध्वजो दमस्यदवाममदासक्तो॥ त्वेतिः सर्वदेतानां सैष्टिर्गसवनावले। भूक्त
धमनगस्तानां दृष्टुर्लेयनभश्चन॥ कर्मममसावावागतायायादिकर्ममिति। अकर्मवा
कहीननु गगयूनक्रगाशन॥ मनुहीनक्रियाहीनरुकिहीनगथेवच। अयदा माझन
हीनदम्यर्तायनभश्चन॥ ॥ वृत्तिज्जसंगमविधिः॥ ॥







